बामसेफ

एवं

राष्ट्रीय मूलनिवासी संघ

दि ऑल इंडिया बैकवर्ड (एस.सी., एस.टी., ओ.बी.सी.) एण्ड मायनॉरिटी कम्यूनिटीज एम्प्लाईज फैडरेशन, नई दिल्ली

केन्द्रीय कार्यालय : 4765/46 (तीसरी मंजिल) रैगरपूरा, करोलबाग, नई दिल्ली - 110005 टेलि.नं. 011-47999869

visit at www.mulnivasibamcef.org www.mulnivasinayak.com E-mail-mulnivasibharat@gmail.com

28 वाँ संयुक्त राष्ट्रीय अधिवेशन

:: दिनांक ::	:: स्थान ::	:: उद्घाटन ::
24 दिसंवर से 28 दिसंबर 2011 (शनिवार से बुधवार)	लिंगायत धर्मसंस्थापक बसवण्णानगर, उप्पीन फार्म हाऊस, नागनल्ली रोड, गुलबर्गा (कर्नाटक)	दिनांक 24 दिसंबर 2011 (शनिवार) समय सुबह 10.00 बजे

उद्घाटक : **मा.शिवरात्रि देशीकेन्द्र** (राष्ट्रीय लिंगायत धर्मगुरु)

मुख्य अतिथि : **मा.पी.बी.सावंत** (पूर्व न्यायमूर्ती, सुप्रिम कोर्ट, भारत)

विशेष अतिथि **बॅरिस्टर एस.के.रविसुंदर** (नार्वे)

डा. चन्द्रप्रकाश (अमेरिका)

मा. प्रशांत राले (आस्ट्रेलिया)

मा.किरण याक्टेन लिंगू (अध्यक्ष मेंगाल डेमोक्रेसी पार्टी, नेपाल)

मा. जे.एच.पाटील (व्हाईस चांसलर, कानून विश्वविद्यालय, धारवाड कर्नाटक)

डा.ई.टी.पुट्टय्या (व्हाईस चांसलर, गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा)

अध्यक्षता : मा. वामन मेश्राम (राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ)

बामसेफ के सभी कार्यकर्ता, कैडर्स एवं मूलनिवासी बहुजन समाज के विद्यार्थी, युवा, महिला, बुद्धिजीवी, सामाजिक कार्यकर्ता एवं हितचिंतकों से अनुरोध है कि पाँच दिवसीय आयोजित बामसेफ एवं राष्ट्रीय मूलनिवासी संघ का 28 वाँ संयुक्त राष्ट्रीय अधिवेशन में विशेष प्रबोधन प्रशिक्षण सत्रों में मूलनिवासी बहुजन समाज से संबंधित ज्वलंत विषयों पर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा होगी, उसे सुनकर फुले-अम्बेडकरी विचारधारा पर आधारित मूलनिवासियों के इस राष्ट्रव्यापी आंदोलन को मजबूत करके उसे सफल बनाने के लिए आप बामसेफ तथा राष्ट्रीय मूलनिवासी संघ को तन-मन-धन से साथ सहयोग करें।

-जय मूलनिवासी !!

:: भवदीय ::

सोमालाल कोटेड	अर्जुनभाई पटेल	शांताराम रणशृंगारे
राष्ट्रीय महासचिव, (व्यवस्थापन) बामसेफ	चेयरमन, राष्ट्रव्यापी आंदोलन निर्माण समिति	राष्ट्रीय महासचिव, (संगठन) बामसेफ

::: कार्यक्रम पत्रिका :::

उद्घाटन सत्र : – 24 दिसंबर 2011 शनिवार (सुबह 10 बजे से 2 बजे तक)
भोजन अवकाश : – दोपहर 2 बजे से 3 बजे तक/रात 9 से 10 बजे तक प्रतिदिन
चाय अवकाश : – शाम 5.30 से 6.00 बजे तक प्रतिदिन

शनिवार दि॰24/12/11 : उद्घाटन सत्र: सुबह 10:00 बजे से दोपहर 2:00बजे तक

विषय अमेरिका अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद को अपने घर में रोकने में कामयाब, परन्तु भारत सरकार भारत मे आतंकवाद रोकने में कामयाब नहीं।–एक गंभीर समीक्षा।

आज से दस साल पहले अमेरिका में अमेरिका का शक्ति का केन्द्र जो व्यापार का जागतिक केन्द्र था उस पर आतंकवादियों ने हमला किया और उसके बाद अमेरिका ने अपने सुरक्षा के लिए जो व्यवस्था की उसकी वजह से पिछले दस साल में दुबारा अमेरिका में केवल एक हमला हुआ। जिसे विफल कर दिया। परन्तु पिछले दस साल में भारत में ३८ हमले हुए। उस हमले की वजह से यह प्रश्न निर्माण हो गया है कि अमेरिका आतंकवादियों के हमले रोकने में कामयाब हो सकता है तो भारत का नेतृत्व भारत में आतंकवादी हमले रोकने में कामयाब क्यों नहीं? इसके पीछे का रहस्य को समझना जरूरी हैं। इस रहस्य को जानने के लिए यह विषय चर्चा करने के लिए रखा गया है।

वक्तागण: **मा॰ आरसु सुमन** (कुवैत), **ई॰ भगवान गायकवाड** (गल्फ कंट्री), **मा॰ सतीश नाटेकर** (यूरोप), **ई॰ जसवंत सोनारा** (फ्रांस), **मा॰ श्यामलाल शाह** (रा॰अ॰रा॰मू॰संघ, नेपाल)

नौ सामाजिक समूह के विद्यार्थियों का एक दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन

शनिवार दि॰24/12/2011 : प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र: 1. दोपहर 3:00 से शाम 5:30बजे तक

विषय केन्द्र सरकार द्वारा 8वीं कक्षा तक परीक्षा ना लेने का कानून पास करना मूलनिवासियों में गुणवत्ता विकसित ना होने देने का ब्राह्मणी षड्यंत्र है।–एक बहस

केन्द्र सरकार ने कुछ दिन पहले केन्द्रीय स्तर पर संसद में एक कानून पास किया, जिसमें यह व्यवस्था की गई है, कि पहली कक्षा से लेकर आठवीं कक्षा तक की परीक्षा ही ना हो। इससे सरकारी विद्यालयों में पढ़नेवाले मूलनिवासी बहुजन समाज के बच्चों में गुणवत्ता (मेरिट)का निर्माण खत्म हो जाएगा। सर्टिफिकेट मिलेगा, मगर गुणवत्ता नहीं होगी। यह बुनियादी शिक्षा को खत्म करने का षड्यंत्र है। इसके पीछे के व्यापक षड्यंत्र का पर्दाफाश होना जरूरी है। इसलिए इस विषय को चर्चा के लिए रखा गया है।

वक्तागण: **डॉ॰सोहनलाल** (रिसर्च स्कॉलर कुरूक्षेत्र युनिवर्सिटी, हरियाणा), **डॉ॰राजेश करंकाल** (मुंबई), **प्रो॰ रणजीत सिंह** (उत्तराखण्ड), **मा॰विट्ठल वॅगान** (गुलबर्गा), **डा॰मायादेवी** (आन्ध्र प्रदेश), **प्रो॰अनवर खान** (आन्ध्र प्रदेश), **प्रो॰राजप्पा ढलवा** (कर्नाटक) **डा॰एस॰के॰संखवार** (उत्तर प्रदेश), **मा॰बी॰तिग्गा**(छत्तीसगढ़)

शनिवार दि॰24/12/2011प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र 2, शाम 6:00 से रात्रि 9:00बजे तक

विषय ब्राह्मणों का मूलनिवासी बहुजनों को शिक्षा का अधिकार मानना, परन्तु अभ्यासक्रम (सिलॅबस) पर नियंत्रण करना ब्राह्मणी षड्यंत्र है।–एक बहस।

मूलनिवासी बहुजन महापुरूषों के आन्दोलन के वजह से ब्राह्मणों को मजबूर होकर मूलनिवासी बहुजनों के शिक्षा के अधिकार को मानना पड़ा। परन्तु ब्राह्मणों ने अभ्यासक्रम (सिलॅबस) पर नियंत्रण करने का षड्यंत्र किया। जिससे शिक्षा का ब्राह्मणीकरण करना संभव हुआ। शिक्षा के ब्राह्मणीकरण के षड्यंत्र का पर्दाफाश करने के लिए और मूलनिवासी बहुजनों को जागृत करने के लिए यह विषय चर्चा के लिए रखा गया है।

वक्तागण: **मा॰विद्या गौतम** (उत्तर प्रदेश), **प्रो॰जैमिनी कडू** (महाराष्ट्र), **प्रो॰करूणा डांगे** (आंध्र प्रदेश), **डॉ॰नैमिप्रिया** (उत्तर प्रदेश), **मा॰प्रतिभा उबाळे** (महाराष्ट्र), **डा॰के॰अनिल कुमार** (केरल), **मा॰एन॰टी॰कृष्णामूर्ति** (मैसूर, कर्नाटक), **प्रो॰वेंकटेश व्ही॰** (बेलगांव, कर्नाटक), **मा॰डी॰जी॰सागर** (स्टेट कनवेनर, डीएसएस, कर्नाटक), **ई॰शंकर राम** (कार्यपालक अभियंता, उत्तर प्रदेश)

नौ सामाजिक समूह के युवकों का एक दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन

रविवार दिनांक : 25.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं. 3 : सुबह 8.30 बजे से 11.30 बजे तक

विषय नई आर्थिक नीति से नक्सलवाद का जन्म–सुप्रीम कोर्ट, अर्थात सलवा–जुडूम को रद्द करने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले को केन्द्र सरकार द्वारा नकारना नक्सलवाद समाप्त करना नहीं, बल्कि बढ़ाना है।–एक बहस

अथवा भारत हयुमन डेवलपमेंट इन्डेक्स में १३४ वे स्थान पर–युनो का यह रिपोर्ट भारत दुनियामें असमानता में अव्वल होने का सबुत है।

कुछ दिन पहले सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया, जिससे यह सिद्ध होता है कि नक्सलाईट समस्या यह केवल कानून और व्यवस्था की समस्या नहीं है, बल्कि केन्द्र सरकार की सामाजिक, आर्थिक गलत नीतियों का परिणाम है। उसके साथ-साथ सुप्रीम कोर्ट ने आदिवासियों की रिजर्व पुलिस (एस॰पी॰ओ॰) अर्थात स्पेशल पुलिस ऑफिसर की फौज बनाकर उसके हाथों में हथियार देकर आदिवासियों को आदिवासियों से मरवाने की योजना का पर्दाफास किया और उसे रद्द कर दिया, परन्तु इतने महत्त्वपूर्ण विषय पर देशभर में जो बहस और चर्चा होनी चाहिए थी, नहीं हुई। इस बात को ध्यान में रखते हुए हम इस विषय पर चर्चा करना चाहते हैं, ताकि इस षड्यंत्र का बड़े पैमाने पर पर्दाफास हो सकें।

वक्तागण: **मा॰पी॰एस॰श्रीधरमूर्ति** (कर्नाटक), **मा॰नागेश कोल्ली**(गुलबर्गा), **मा॰संदीप चौव्हाण** (आन्ध्र प्रदेश), **मा॰वाय॰अनतया** (कर्नाटक), **मा॰सोमालाल कोटेड** (राजस्थान), **मा॰विजय कुंजूर** (झारखण्ड), **आयु॰महानंदा टेकाम** (महाराष्ट्र), **ई॰अर्जुन सिंह** (बिहार), **मा॰भरतचंद्र सिंह** (उड़ीसा), **मा॰शंकरलाल कटारा** (राजस्थान), **मा॰बी॰एस॰रावटे** (छत्तीसगढ़), **डॉ॰सतीश पाचपुते** (महाराष्ट्र)।

रविवार दि. : 25.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं. 4 : सुबह 11.30 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक

विषय वर्तमान जाति आधारित गिनती, जाति आधारित गिनती नहीं है, बल्कि निर्धनता (बीपीएल) आधारित गिनती है।-ओबीसी के साथ धोखाधड़ी का विश्लेषण।

केन्द्र सरकार ने संसद में जाति आधारित गिनती का आश्वासन दिया था। यह बात सांसदीय दस्तावेज से साबित होती है। संसद में सभी पार्टियों की सहमति होने के बाद सरकार ने यह आश्वासन दिया था। परन्तु केन्द्र सरकार ने जो शासनादेश निकाला उसके अनुसार जिसकी आमदनी दस हजार रूपये होगी उसकी गिनती नहीं होगी, यह आदेश सरकार ने निकाला है। इस आदेश के अनुसार यह जाति आधारित गिनती नहीं है, यह बात साबित होती है। इस धोखाधड़ी को साबित करने के लिए और मूलनिवासी बहुजनों को जागृत करने के लिए इस विषय को चर्चा का विषय बनाया है।

अथवा

विषय भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन, भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन नही है,बल्कि जाति आधारित गिनती के मुद्दे पर पर्दा डालने का और उसे पीछे ढ़केलने का आन्दोलन है।-एक बहस।

देश में भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन चाहे बाबा रामदेव के नेतृत्व में हुआ हो या अण्णा हजारे के नेतृत्व में हुआ हो, वह आन्दोलन भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन नहीं था और वह आन्दोलन जाति आधारित गिनती पर पर्दा डालने के लिए और पर्दा डालकर उसे पीछे ढ़केलकर उस मुदें को खत्म करने के लिए किया गया षड्यंत्रकारी आन्दोलन था। यह षड्यंत्र शासक जातियों का षड्यंत्र था। परन्तु मूलनिवासी बहुजनों को इस षड्यंत्र की जानकारी नहीं है। इस षड्यंत्र की जानकारी देने के लिए यह विषय चर्चा के लिए बनाया गया है।

वक्तागण: **आयु॰सुजाता काले** (महाराष्ट्र), **प्रो॰जगन्नाथ प्रमाणिक** (पश्चिम बंगाल), **एड॰जे॰एस॰कश्यप** (उत्तर प्रदेश), **ई॰अशोक पाटील**(महाराष्ट्र), **मा॰धवलेश्वर बाध**(उड़ीसा), **मा॰पारसनाथ यादव**(उत्तर प्रदेश), **प्रो॰सुनील निरहाली** (महाराष्ट्र), **डा॰ एम॰ सारंगधरण** (केरल), **मा॰वाय॰ किरण कुमार** (आन्ध्र प्रदेश), **डा॰जगजीवन राम** (कर्नाटक), **मा॰रामचन्द्र रेड्डी** (पूर्व सांसद आन्ध्र प्रदेश), **मा॰एम॰चिन्नास्वामी** (कर्नाटक), **डा॰जे॰सोमशेखर** (मैसूर,कर्नाटक), **डा॰अशोक** (हैदराबाद)

रविवार दि॰25/12/11, प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र . 5. समय: दोपहर 3:00 से शाम 5:30 बजे तक

विषय अनियंत्रित सत्ता पर ब्राह्मणों का नियंत्रण ही भ्रष्टाचार का मूल कारण है।-एक बहस।

अगर भारत में सत्ता संरचना का अध्ययन किया जाए तो यह साबित होता है कि, भारत के सत्ता पर सिर्फ ब्राह्मणों का नियंत्रण है। लोकतंत्र का सिद्धान्त सत्ता विभाजन के सिद्धान्त पर खड़ा है। परन्तु भारत में एक अकेले ब्राह्मण जाति का सभी सत्ताओं पर नियंत्रण होने की वजह से भारतीय लोकतंत्र मे सत्ता विभाजन का सिद्धान्त विफल हो गया है। इसलिए नियंत्रण एवं संतुलन बनाना संभव नहीं हुआ। परिणामत: भारत में ब्राह्मणों का केवल सत्ता पर नियंत्रण ही नहीं हुआ, बल्कि अनियंत्रित सत्ता ब्राह्मणों के नियंत्रण में चली गई। वर्तमान अति भ्रष्टाचार का मूल कारण ब्राह्मणों का अनियंत्रित सत्ता पर नियंत्रण ही कारण है। बिमारी कहीं और है और इलाज कहीं और किया जा रहा है। ऐसा क्यों किया जा रहा है, इसके पीछे का षड्यंत्र बताया जाना जरूरी है। इसलिए इस विषय पर चर्चा करायी जा रही है।

वक्तागण: **प्रो॰गुरूनाम सिंह मुक्तसर** (पंजाब), **प्रो॰कंचनलता लांजेवार** (मध्य प्रदेश), **मा॰पूर्णिमा काटकर** (गुजरात), **मा॰मंगला थोरात** (महाराष्ट्र), **एड॰महेश कौलगी** (कर्नाटक), **डा॰व्ही॰व्ही॰सुब्रह्मण्यम** (आन्ध्र प्रदेश), **मा॰सैयद् फिरोजुद्दीन** (आन्ध्र प्रदेश), **मा॰लतिफ खान** (आन्ध्र प्रदेश), **डॉ॰डॉमीनिक** (कर्नाटक), **मा॰राहुल पोकळे** (महाराष्ट्र), **डा॰आर॰एस॰मरकाम** (छत्तीसगढ़), **मा.प्रविण गायकवाड** (महाराष्ट्र), **डा.प्रदिप आगलावे** (महाराष्ट्र)

रविवार दिनांक : 25.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं.6 :शाम 6.00 से 9.00 बजे तक

विषय डॉ॰बाबासाहब अम्बेडकर की हत्या एक निर्विवाद सत्य-एक चर्चा।

डा॰बाबासाहब अम्बेडकर की हत्या हुई है ऐसी आशंका दीर्घकाल से लोगों के मन में थी। परन्तु इसे निर्विवाद रूप से साबित बात नहीं मानी जाती थी। इसलिए लोगों के मन में आशंका भी मानी जाती थी। परन्तु अभी-अभी प्रा॰विलास खरात की इस विषय पर एक किताब आयी है और इस विषय की गहन शोध के बाद प्रा॰खरात ने साबित कर दिया है कि, डा॰बाबासाहब अम्बेडकर की हत्या हुई है। यह हत्या क्यों हुई? इसकी जानकारी लोगों को हो और अपने लोगों को भविष्य में आनेवाले खतरों के बारे में अगाह करने के लिए इस विषय पर चर्चा की जा रही है।

वक्तागण: **मा॰भालचंद्र लोखंडे** (महाराष्ट्र), **प्रो॰विलास खरात** (महाराष्ट्र), **एड॰अनंतराव दारवटकर**(महाराष्ट्र), **मा॰ पी॰एस॰सदार** (महाराष्ट्र), **प्रो.एम.एल.मतकर** (महाराष्ट्र)

लिंगायत धर्म के विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन

सोमवार दिनांक : 26.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र.7 सुबह 8.30 से 11.30 बजे तक

विषय रामायण रचियता बाल्मीकि ब्राह्मण थे, वह सफाई, मजदूरी करनेवाले जाति के नहीं थे। जिला-कपूरथला (पंजाब) जज का ऐतिहासिक फैसला।-एक बहस

पंजाब के जिला कपूरथला स्थित जिला न्यायालय ने यह फैसला दिया है कि, रामायण रचियता बाल्मीकि ब्राह्मण थे। उनका शूद्र - अतिशूद्रों से कोई संबंध नहीं था। इस वजह से केस दायर करनेवाले लोगों की धार्मिक भावनाएँ को दुखाने का मुद्दा हीं नहीं बनता है। ऐसा फैसला दिया है। पंजाब राज्य के बाल्मीकि की जातियों की संगठनाएँ यह बात साबित करने में विफल हो गये कि, बाल्मीकि सफाई करनेवाले लोगों के जाति के थे। यह ऐतिहासिक फैसला बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस विषय पर सारे देशभर में बाल्मीकि जातियों के अन्दर व्यापक बहस होने की आवश्यकता है, विचार मंथन होने की आवश्यकता है। ताकि उसमें से अमृत निकल सकें।

वक्तागण: **मा॰सुन्दरलाल टाकभोरे** (महाराष्ट्र), **प्रो॰हरनेक सिंह** (पंजाब), **मा॰लक्ष्मीनारायण सौदे** (उत्तर प्रदेश), **मा॰रमेश चौव्हाण** (गुजरात), **मा॰आर॰सी॰संगर** (पंजाब)

सोमवार दिनांक :26.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं.8 :सुबह 11.30 से 2.00 बजे तक

विषय लिंगायत धर्म ब्राह्मण धर्म का भक्तिपंथ नहीं है, बल्कि ब्राह्मण धर्म के वर्चस्व के विरोध मे दक्षिण भारत का सबसे बड़ा आन्दोलन था।-एक गंभीर चर्चा

ब्राह्मण धर्म के लोग जिस तरह से संत आन्दोलनों को भक्ति आन्दोलन बताने का प्रयास कर रहे हैं। उसी तरह से लिंगायत धर्म को भी भक्ति आन्दोलन बताने का प्रयास करते हैं और ब्राह्मण देवताओं के शरण में जाने को कहते हैं। यह ब्राह्मणी षड्यंत्र है। इसका पर्दाफाश करना जरूरी है और लिंगायत धर्म का पुर्नजागरण होना जरूरी है। इस बात को ध्यान में रखते हुए इस विषय को चर्चा का विषय रखा गया है।

वक्तागण: **ई॰शशिकान्त उरगुंडे** (महाराष्ट्र), **संजय गायकवाड** (महाराष्ट्र), **मा॰चन्नाबसव पट्टदेवरा** (कर्नाटक), **मा॰भीमण्णा खंडरे**(विरशैव लिंगायत महासभा, कर्नाटक), **डा॰काशीनाथ अंबलगे** (कर्नाटक), **मा॰ सुमंगला अंगडी** (कर्नाटक) **मा॰प्रदिप भास्करराव चालुक्य** (महाराष्ट्र)

सोमवार दिनांक : 26.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं.9:दोपहर 3.00 से 5.30 बजे तक

विषय लिंगायत धर्म ब्राह्मण धर्म का पंथ नहीं है बल्कि एक स्वतंत्र धर्म है।-एक गंभीर चर्चा

ब्राह्मण धर्म के लोग लिंगायत धर्म को ब्राह्मण धर्म का पंथ बताते हैं। परन्तु लिंगायत धर्म के मौलिक साहित्य का अध्ययन करने के बाद यह बात सिद्ध होती है कि यह धर्म ब्राह्मण धर्म का पंथ नहीं है, बल्कि ब्राह्मण धर्म विरोधी स्वतंत्र धर्म है। उस समय का ब्राह्मण धर्म विरोधी भारत का सबसे बड़ा आन्दोलन था और है। उसे समाप्त करने के लिए लिंगायत धर्म को ब्राह्मण धर्म का पंथ बताना ब्राह्मणी षड्यंत्र है। इसका पर्दाफाश करने के लिए और लिंगायत धर्म का वास्तविक रूप सामने लाने के लिए यह चर्चा करायी जा रही है।

अथवा ब्राह्मणों ने बौद्ध धर्म के नरसंहार के लिए जो किया वही लिंगायत धर्म के नरसंहार के लिये किया।-एक ऐतिहासिक विश्लेषण

लिंगायत धर्म का समूलनाश करने के लिए लिंगायत धर्म के मूल महापुरूषों को, संस्थापकों को, मौलिक प्रचारकों को और उसके मौलिक साहित्य को खत्म करने का और लोगों का नरसंहार करने का षड्यंत्र ब्राह्मणों द्वारा किया गया है। ऐसा ही प्रयास बौद्ध धर्म का विनाश करने के लिए किया गया था। विनाश का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए और ब्राह्मणी षड्यंत्र का पर्दाफाश करने के लिए यह विषय चर्चा के लिए रखा गया है।

वक्तागण: **के॰वियज कुमार** (महाराष्ट्र), **मा॰ कोरणेश्वर अप्पा** (लिंगायत धर्मगुरू, कर्नाटक), **प्रो॰गंगाधर गिते** (महाराष्ट्र), **डा॰सिद्धण्णा लंगोटी** (कर्नाटक), **ई॰संजय माकल** (कर्नाटक), **मा॰बसवलिंग स्वामी** (लिंगायत धर्मगुरू,महाराष्ट्र), **कॉ॰धनाजी गुरव** (महाराष्ट्र), **ई॰प्रवीण तेली** (महाराष्ट्र), **मा॰ मल्लीनाथ ऐनापुरे** (कर्नाटक)

सोमवार दिनांक: 26.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं.10:शाम 6.00 से 9.00 बजे तक

विषय अल्पसंख्यांक ब्राह्मण बहुसंख्यांक बनने के लिए मूलनिवासी बहुजनों के (एस॰सी॰, एस॰टी॰, ओबीसी और इससे धर्म-परिवर्तित) विरोध मे देश में बम विस्फोट करने का षड्यंत्र करते हैं।-एक गंभीर मंथन

लोकतंत्र में अल्पसंख्यांक जाति के लोग सत्ता पर कभी भी काबिज नहीं हो सकते। ब्राह्मण अल्पसंख्यांक जाति है और नस्लीय दृष्टि से विदेशी भी है। ऐसी स्थिति में ब्राह्मण लोकतंत्र में सत्ता पर काबिज नहीं हो सकते और सत्ता पर काबिज हुए बगैर ब्राह्मण अपना वर्चस्व स्थापित नहीं कर सकता। अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए अल्पसंख्यांक ब्राह्मणों को बहुसंख्यांक होना जरूरी है। इसलिए बम विस्फोट करना जरूरी है। शृंखलाबद्ध बम विस्फोट करने से अनुसूचित जाति, जनजाति और ओबीसी का हिन्दू के नाम पर ध्रुवीकरण करना संभव होता है और मुसलमानों का मुसलमान के नाम पर ध्रुवीकरण करना संभव होता है। इससे अल्पसंख्यांक ब्राह्मण बहुसंख्यांक बन जाता है और सत्ता पर काबिज होता है। इस षड्यंत्र का पर्दाफाश करने के लिए यह चर्चा रखी गई है।

वक्तागण: **एड॰ अशोक कुमार बसोत्रा** (जम्मू), **मा॰ आर॰के॰आकोदिया** (राजस्थान), **मा॰ मुफ्ति मोहम्मद युसुफ** (महाराष्ट्र), **मा॰सैयद मकसूद** (आन्ध्रा), **मा॰अब्दुल वाहिद** (कर्नाटक), **डा॰बी॰पी॰महेश चन्द्रागुरू** (कर्नाटक), **मा॰सिलबंत सुभाष** (कर्नाटक), **एड॰इकबाल अहमद शरीफ** (कर्नाटक), **आयु॰सुमिता पाटील** (महाराष्ट्र), **मा॰एस॰आर॰यादव** (उत्तर प्रदेश), **मा॰सुफिया खातुन** (पश्चिम बंगाल), **मा॰बी॰ए॰तनवीर** (उड़ीसा), **मा॰ मौलाना अब्दुल हमीद अजहरी** (महाराष्ट्र), **डा॰रफीक सय्यद** (महाराष्ट्र)।

नौ सामाजिक समूह के महिलाओं का एक दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन

मंगलवार दिनांक: 27.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं.11 सुबह 8.30 से 11.30 बजे तक

विषय वर्तमान में हरिचांद-गुरूचांद के मतुआ आन्दोलन का इस्तेमाल एक ब्राह्मणी षड्यंत्र।

बंगाल में हरिचांद-गुरूचंद का मतुआ आन्दोलन एक समय में बहुत बड़ा आन्दोलन था और इस आन्दोलन का सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन पर काफी गहरा असर पड़ा। यह आन्दोलन बंगाली ब्राह्मणों के गुलामी से हमारे आजादी का आन्दोलन था। परन्तु जिस तरीके से आज ब्राह्मणों के द्वारा इस आन्दोलन का दोहन हो रहा है, यह बड़े षड्यंत्र का विषय है। इसका पर्दाफास होना जरूरी है। पर्दाफास करने के लिए यह चर्चा का विषय रखा गया है।

वक्तागण: **मा॰ए॰टी॰बाला** (महाराष्ट्र), **डा॰ सुदिप्त नसकर** (पश्चिम बंगाल), **डा॰ सुनिल हलधार** (उड़ीसा), **मा॰ जे॰सी॰मंडल** (उत्तर प्रदेश), **मा॰ के॰एल॰विश्वास** (प॰ बंगाल)

मंगलवार दि. 27.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं. 12. समय सुबह 11.30 से 2.00 बजे तक

विषय सभी महिलाओं को ब्राह्मण धर्म ने शूद्र घोषित किया, ऐसा क्यों किया?-एक शोध विषय

ब्राह्मण धर्म शास्त्रों में एक आश्चर्यजनक बात दस्तावेजी प्रमाण के आधार पर दिखायी देती है कि, सभी महिलाओं को इतना ही नहीं बल्कि ब्राह्मण महिलाओं को भी शूद्र घोषित किया हुआ है। यह आश्चर्यजनक बात है। परन्तु इसका शोध इतिहास विषय में कहीं पर भी लिखा हुआ दिखायी नहीं देता। इसका शोध करना जरूरी है। इस बात को ध्यान में रखते हुए इस शोध विषय को शोध करने के लिए रखा गया है। ताकि वास्तविक जागृति हो सकें।

अथवा ढोल, गवार, शूद्र, पशु, नारी ये है सब ताड़न के अधिकारी (सुन्दरकाण्ड, चौपाई 58-3)

अथवा स्त्री वैश्य एवं शूद्र पाप योनि है। (गीता अध्याय-9, श्लोक-32)

अथवा विधहु न नारि हृदय गति जानी, सकल कपट अघ अवगुन खानी।। (अयोध्याकाण्ड भाग-4 दोहा 161 चौ॰2)

रामचरित मानस में समस्त मूलनिवासी महिलाओं के बारे में जिस तरीके से अपमानित किया गया और प्रताड़ित किया गया है यह बात भयानक है। परन्तु धर्मशास्त्रों में लिखी हुई बातों के बारे में महिलाओं को कोई जानकारी नहीं है। महिलाओं को शास्त्रों के आदेशों की जानकारी हो और किस षड्यंत्रों के तहत यह किया गया है। उसकी जानकारी देने के लिए और महिलाओं में जागृति फैलाने के लिए यह विषय चर्चा के लिए रखा गया है।

वक्तागण: **मा॰उर्मिला पवार** (महाराष्ट्र), **मा॰चारूबेन चौव्हाण** (गुजरात), **मा॰अनिता अहारी** (राजस्थान), **मा॰फुलाताई जाधव** (महाराष्ट्र), **डा॰आशा इंदू** (मध्य प्रदेश), **मा॰रंजना मेश्राम** (महाराष्ट्र), **मा॰राधा मीणा** (राजस्थान), **मा॰विद्या ज्योति** (बिहार), **मा॰गीता पाटील** (महाराष्ट्र), **आयु॰अरूण्धती** (बंगलोर, कर्नाटक), **डा॰अमृता कटके** (कर्नाटक), **डा॰जागृती देशमाने** (कर्नाटक), **आयु॰लक्ष्मीबाध** (उड़ीसा), **मा॰शीतल पिलेवान** (महाराष्ट्र), **मा॰बेरूनिका डुमडुम** (उड़ीसा), **मा॰शेख अफसाना सेहरा** (श्रीनगर, कश्मीर), **मा॰खुर्शीद अंसारी** (महाराष्ट्र), **प्रो॰वहिदा मोमीन** (महाराष्ट्र)

मंगलवार दि.27.12. 2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं. 13.समय दोपहर 3.00 से 5.30 बजे तक

विषय मीडिया के बारे में केन्द्रीय मंत्रीमंडल का निर्णय ब्राह्मणों का एकाधिकार स्थापित करने के लिए उठाया गया कदम

अथवा मीडिया के बारे में केन्द्रीय मंत्रीमंडल का निर्णय मीडिया की स्वतंत्रता समाप्त करने का षड्यंत्र है।

अभी-अभी केन्द्र सरकार ने मीडिया के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। वो निर्णयों का अध्ययन करने के बाद ऐसा लगता है कि मीडिया की स्वतंत्रता समाप्त हो जाएगी। दूसरी और महत्त्वपूर्ण बात लगती है कि ऐसा निर्णय लेने के पीछे जिन जातियों का सत्ता पर नियंत्रण है वो एकाधिकार बरकरार रखने के लिए उठाये गये कदम है, ऐसा लगता है। इससे मूलनिवासी बहुजनों को अपना मीडिया खड़ा करना और खड़ा करने के बाद उसकी स्वतंत्रता को बरकरार रखना काफी कठिन होगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए इन षड्यंत्रकारी कदमों का विरोध करना जरूरी है। इसलिए इन विषयों को चर्चा के लिए रखा गया है।

वक्तागण: **मा॰पलाश विश्वास** (प॰बंगाल), **प्रो॰दिलीप मंडल** (जेएनयू, दिल्ली), **मा॰राजीव रंजन** (दिल्ली), **एड॰मजहर हुसैन** (कर्नाटक), **डा॰रविन्द्र कुमार** (हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश), **डा॰सोहेब रियालू** (केरल), **मा॰सैयद नासिर अहमद** (आन्ध्रा), **प्रो॰आई॰मारूती** (कर्नाटक), **मा॰ सुमन** (प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता, दक्षिण भारत)

मंगलवार दि. : 27.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं 14 :शाम 6.00 बजे से 9.00 बजे तक

विषय रेणके कमीशन पर अमल ना करना और अमल करने का आश्वासन देकर चुनाव में इस्तेमाल करना एक ब्राह्मणी षड्यंत्र है।

रेणके कमीशन की रिपोर्ट को कांग्रेस ने कचरे के ढ़ेर में फेंक दिया है। परन्तु हमारे देश में अलग-अलग राज्यों के चुनाव होते ही रहते हैं। उन चुनावों में घुमन्तू जातियो के नेताओं का इस्तेमाल करने का कांग्रेस ने अच्छा तरीका ढूँढ़ कर निकाला है। आश्वासन दो और चुनाव में इस्तेमाल करो और इस्तेमाल करने के बाद उसे फेंक दो। यह चल रहा है। परन्तु इसके बारे में घुमन्तू जाति के कार्यकर्ता एवं घुमन्तू जाति के लोगों को इन सारी बातों की जानकारी नहीं है। उनको जानकार बनाने के लिए और जागृत करने के लिए यह विषय चर्चा के लिए रखा गया है।

वक्तागण: **प्रो॰सुनिता राठोड** (महाराष्ट्र), **व्ही॰व्ही॰जाधव** (महाराष्ट्र), **यशोदा राठोड** (महाराष्ट्र), **डॉ॰निलेश राणा** (दिल्ली), **ई॰ दिलीप पालवे** (महाराष्ट्र), **मा॰बिज्रमोहन** (हरियाणा), **मा॰रमेश कुसालकर** (महाराष्ट्र), **मा॰दिलीप परदेशी** (महाराष्ट्र), **के॰ मुरूगेसन** (तमिलनाडू), **दिगम्बर काले** (महाराष्ट्र), **विद्या भारती** (महाराष्ट्र)

बुधवार दिनांक : 28.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं 15 : सुबह 8.30 से 11.30 बजे तक

नौ सामाजिक समूह के वकिलों का एक दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन

विषय ब्राह्मणी वर्चस्व की वजह से वर्तमान ट्रेड युनियन आन्दोलन विफल हो गया है।-एक बहस

अथवा मूलनिवासी बहुजनों के मजदूरों और कर्मचारियों का नया ट्रेड युनियन आन्दोलन खड़ा करना ही एक मात्र विकल्प है।-एक चर्चा

भारत वर्तमान ट्रेड युनियन आन्दोलन ब्राह्मणों के कब्जे में है और उन्होंने इस ट्रेड युनियन आन्दोलन का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लिबरलाईजेशन, प्रायवटायजेशन, ग्लोबलायजेशन (एल॰पी॰जी॰) के समर्थन में इस्तेमाल किया। ब्राह्मणों का ऐसा करने से ट्रेड युनियन आन्दोलन ने अपनी प्रासंगीकता खो दी। इससे यह आन्दोलन प्रभावशून्य हो गया। ब्राह्मणों ने ऐसा क्यूँ और कैसे किया, इसका विश्लेषण करने की आवश्यकता है। ताकि नये आन्दोलन का सूत्रपात करने के लिए लोगों को आवश्यकता महसूस हो। इस बात को ध्यान में रखते हुए यह चर्चा करायी जा रही है।

वक्तागण: **एड॰ जुपल्ली कृष्णा** (आन्ध्र प्रदेश), **एड॰सिद्धार्थ एस॰** (कर्नाटक), **एड॰ शेशानन्दन** (कर्नाटक), **एड॰ पी॰आर॰सुरेश** (केरल), **मा॰ सिद्धार्थ बर्वे** (महाराष्ट्र), **मा॰ जे॰सी॰ सेंगल** (गुजरात), **मा॰ पलाश विश्वास** (प॰बंगाल), **मा॰ किशोरभाई बोरिचा** (महाराष्ट्र), **मा॰ शिव मोहन श्रीवास्तव** (उत्तर प्रदेश), **मा॰ पी॰एन॰सोलंकी** (मध्य प्रदेश), **मा॰ बिनोद बादी** (उड़ीसा), **मा॰ रामप्रसाद** (आन्ध्र प्रदेश), **मा॰ सुभांकर सरकार** (प॰बंगाल)

बुधवार दि॰28/12/11, प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्र॰16 सुबह-11.30 से 2.00 बजे तक

विषय चुनाव सुधार की केवल चर्चा करना और उस पर अमल ना करना ब्राह्मणों का भारत पर कब्जा बनाये रखने का एक षड्यंत्र है।- एक बहस

आजादी मिलने के बाद जो चुनाव प्रणाली स्वीकार की गई है वह चुनाव प्रणाली वास्तविक जनमत प्रतिध्वनित करनेवाली व्यवस्था नहीं है ऐसा लगता है। क्योंकि उससे वास्तविक प्रतिनिधि (रियल रिप्रजेंटेटिव) चुनकर नहीं जाते। इस दृष्टि से चुनाव सुधार होना जरूरी है। परन्तु पिछले बीस सालों से चुनाव सुधार की केवल चर्चा होती है और बाद में इस पर पर्दा डाल दिया जाता है। भारत का शासक वर्ग ब्राह्मण है और वो बिल्कुल चुनाव सुधार नहीं चाहता है। वर्तमान चुनाव प्रणाली ब्राह्मणों के लिए अनुकूल है। उसी चुनाव प्रणाली से उनको सत्ता पर कब्जा करना संभव हुआ है। इस षड्यंत्र को नंगा करना जरूरी है। इसलिए इस विषय पर चर्चा जरूरी है।

वक्तागण: **एड॰ एस॰एस॰गाजियोद्दीन** (महाराष्ट्र), **डा॰ मायाशंकर** (उत्तर प्रदेश), **मा॰ रामदेव विश्वबंधु** (झारखण्ड), **प्रो॰ प्रतापचन्द्र पवार** (राजस्थान), **ई॰ आर॰के॰राम** (उत्तर प्रदेश), **मा॰ सुनील बोरसे** (मध्य प्रदेश)

बुधवार दिनांक : 28.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं 17 : दोपहर 3 से 5.30 बजे तक

विषय संसद में प्रस्तावित कानून के द्वारा न्यायिक जवाबदेही संभव नहीं है-एक बहस

अभी-अभी संसद में न्यायिक जबाबदेही का बील प्रस्तुत किया गया है। उसका ड्राफ्ट बहुत लचर है। उससे न्यायिक जबाबदेही बिल्कुल संभव नहीं है। फिर भारत का शासक वर्ग ऐसी धोखाधड़ी क्यों कर रहा है? इस षड्यंत्र का पर्दाफाश करना जरूरी है। इसलिए यह विषय चर्चा का विषय बनाया गया है।

वक्तागण: **मा॰ हरिकिशन सांपला** (हरियाणा), **मा॰ जितेन्द्र कुमार** (दिल्ली), **मा॰ बद्री सुखदेव** (छत्तीसगढ़)

बुधवार दिनांक : 28.12.2011 प्रबोधन प्रशिक्षण सत्र क्रं 18 : शाम 6.00 से 9.00 बजे तक

विषय केन्द्र सरकार का अखबारों के लिए पे कमीशन लागू करना छोटे अखबारों को समाप्त करने का षड्यंत्र है और ब्राह्मणी नियंत्रण बरकरार रखने का कदम है।

लोकतंत्र में जन से बड़ा जनमत होता है और इसलिए जनमत बनाने के साधनों का महत्व होता है। भारत में ब्राह्मण-बनिया का बड़े अखबारों पर कब्जा है, परन्तु छोटे अखबारों पर कब्जा है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। ऐसे स्थिति में छोटे अखबारों पर कब्जा करने के लिए सरकार को कदम उठाना जरूरी लगा और अखबारों के लिए पे कमिशन लागू किया। पे (वेतन) सरकार को देना नहीं है, पे (वेतन) अखबारवालो को देना है। अगर अखबारवाले वेतन नहीं देते हैं तो छोटे अखबारवाले को अपने अखबार बंद करने पड़ेंगे। छोटे अखबार मूलनिवासी बहुजनों के हो सकते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए और षड्यंत्र से पर्दा हटाने के लिए इस विषय पर चर्चा जरूरी है।

वक्तागण: **मा॰के॰कृष्ण कुमार** (तमिलनाडू), **डा॰शिवानन्दन** (केरल), **मा॰पी॰एम॰राजीव** (केरल), **मा॰शैलेश शैल** (पत्रकार छत्तीसगढ़), **प्रो॰रमेश टाईगर** (हरियाणा), **ई॰हेमचंद चौव्हाण** (शिमला, हिमाचल प्रदेश), **ॲड.उत्तम जाधव** (महाराष्ट्र)

सभी सत्रों की अध्यक्षता मा. वामन मेश्राम, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ करेंगे।